तारामणि : एक विकलांग युवती की प्रेरणा कथा

बालमुकुन्द ओझा

यदि रुचि, उत्साह और दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो विकलांगता अभिशाप न रहकर सामाजिक कल्याण का वाहक बन सकती है। झुंझुनूं जिले की उदयपुवाटी पंचायत समिति के ग्राम रवींवासर की 20 वर्षीया तारामणि धींवा इसी बात का प्रमाणित करती है।

वह बनारसी राम धींवा की बेटी है। वह जन्म से विकलांग है। जिले में चल रहे साक्षरता अभियान से प्रेरित होकर, महिला समाज में साक्षरता का अलख जगाने के लिए, वह अपने घर में ही साक्षरता केंद्र चला रही है। वह इन्हें केंद्र से जोड़ने, इनमें रुचि और ललक पैदा करने तथा इनके उत्साह को बनाए रखने का सारा दायित्व निभाती है। पैरों का काम हाथों से लने वाली तारामणि धींवा आठवीं तक पढ़ती है। उसने साक्षरता केंद्र की शुरुआत की गांव की एक महिला से। एक से दो और दो से चार होकर अब तेरह महिलाएं उसके केंद्र में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। तारामणि घिसट-घिसट कर गांव की झाड़झंखाड़ और कांटे, पत्थरों वाली गलियों से गुजरती हुई महिलाओं से दुख दर्द पूछती है। वह इनमें साक्षरता की जोत जलाए रखने का प्रयास करती है।

पठानकोट में सीमा प्रहरी के रूप में सेवारत मानसिंह को जब अपनी पत्नी के हाथ से लिखा पत्र मिला तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा हो सकता है। जब वह अपने गांव लौटकर आया तो उसकी पत्नी श्रीमती सुरेश ने बताया कि उसे पढ़ना लिखना सिखाने का सारा श्रेय तारामणि को है। इससे मानसिंह को बड़ी प्रसन्नता हुई। वह तारामणि को धन्यवाद देने उसके घर पहुंचा। आज सुरेश जैसी अनेक बहुएं बाहर रहने वाले अपने पतियों को पत्र लिखकर अपनी भावना का इजहार कर सकती हैं।

गांव की नवसाक्षर महिलाएं तारामणि से बहुत प्रसन्न हैं। वे दोपहर के आराम के क्षणों का सदुपयोग तारामणि से कुछ सीखने में करती हैं। अब वे पुस्तक पढ़ लेती हैं, घर का हिसाब कर लेती हैं। और अपने प्रवासी पतियों को पत्र लिख लेती हैं। □

(साभार-साक्षरता मिशन)

लड़की लड़का एक समान
मानो हमारी बात जहान
लड़की लड़का एक समान
लाड प्यार से बेटी पालें
पढ़ना लिखना उसे सिखालें
वो भी करले काम महान
लड़की लड़का एक समान